पुस्तक समीक्षा

स्कूल में आज तुमने क्या पूछा?

फूलचन्द मेघवाल*
भूपेन्द्र सिंह**

पुस्तक का नाम — *स्कूल में आज तुमने क्या पूछा?*
लेखक का नाम — कमला वी. मुकुन्दा
अनुवादक — पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा
प्रकाशन वर्ष — 2014
प्रकाशक — एकलव्य, भोपाल (मध्य प्रदेश)

अभी कक्षा 8 का परिणाम आया ही था कि मेरे मित्र ने चाय पर चर्चा के दौरान अपनी बेटी के बारे में ज़िक्र कर दिया। उन्होंने करीब-करीब उन सभी उत्कृष्ठ खिलाड़ियों के नाम गिना दिए, जिनके जैसा अपनी बेटी को बनाने की सोच लिए बैठे थे। मैंने चर्चा खत्म होते-होते बस उनसे यह पूछ लिया कि उन सबके जैसा ही क्यों? यदि वह जैसी खुद है वैसी ही बनी रहे तो इसमें क्या बुराई है? क्या उसका स्वयं का कोई अस्तित्व नहीं?

लेखिका 1980 के दशक में लिखी गई पुस्तक *डोंट पुश योउर प्रीस्कूलर* के विचारों से प्रेरित

**शोधार्थी*, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, रावतभाटा रोड, कोटा, राजस्थान 324 010
***वरिष्ठ शोधार्थी*, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, रावतभाटा रोड, कोटा, राजस्थान 324 010

© NCERT not to be republished

होकर लिखती हैं कि विकास गुणात्मक रूप से अलग-अलग चरणों में बढ़ता है तो फिर बच्चे को क्यों उस क्षेत्र में धकेलना जिसके लिए वह न तो बना है और न उसकी रुचि का है। ऐसा करने से बच्चे की रुचि, कल्पना और अनुभवों के प्रवाह में बाधा उत्पन्न होती है (जैसा कि लेखिका ने 1989 में मेरिऑन हायसन और उनके साथियों के द्वारा किए गए अनुसंधानों के नतीजों में पाया)। लेकिन पर्याप्त अनुसंधान बताते हैं कि लगातार चुनौती और उद्दीपन मिलते रहें तो मस्तिष्क आजीवन सीखने में सहायक है। इस पर एल्बर्ट आइन्स्टीन का उदाहरण देते हुए लेखिका लिखती हैं कि जो बचपन में अपनी आयु के बच्चों जितना भी नहीं सोच सकता था, वह सापेक्षता का सिद्धांत विकसित करने वाला कैसे बन गया? अतः उचित एवं अनुकूलित वातावरण प्रदान कर बच्चों में विकास की गति को बढ़ाया जा सकता है।

पुस्तक स्कूल में आज तुमने क्या पूछा? कमला वी. मुकुन्दा द्वारा बाल-शिक्षण को उजला करने का प्रयास है। न्यूयॉर्क में प्राप्त अध्यापन के अनुभवों और बंगलुरु के सेंटर फ़ॉर लर्निंग के दौरान शिक्षकों और अभिभावकों की ऐसी जिज्ञासाएँ जिनके बारे में मनोविज्ञान विषय में रचित पुस्तकें आदर्शात्मक रवैया तो रखती हैं लेकिन वास्तविक स्थितियों पर कोई स्पष्टीकरण नहीं देती, की आनुभविक पृष्ठभूमि पर यह पुस्तक लिखी गई है। ग्यारह अध्यायों में विभक्त इस पुस्तक का हिंदी भाषा में अनुवाद पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा द्वारा किया गया है। प्रत्येक अध्याय एक-दूसरे से अंत:क्रियात्मक रूप से संबंधित है। 334 पृष्ठों में सीमित यह पुस्तक हिंदी भाषा के पाठकों, शिक्षार्थियों, शोधार्थियों और शिक्षकों के लिए विचार-बोधनी का कार्य करती प्रतीत होती है। लेखिका ने पुस्तक के माध्यम से बालक के प्रारम्भिक विकास से लेकर किशोरावस्था तक होने वाले परिवर्तनों व सीखने की प्रक्रिया को मनोवैज्ञानिक रूप से समझाने की कोशिश की है।

लेखिका के विचार हैं कि बच्चों में स्वयं की ज़रूरतों को पूरा करने जितनी समझ तो स्वयं से ही उत्पन्न होने देनी चाहिए। लेकिन इसके लिए सुस्पष्ट निर्देशों के साथ-साथ औपचारिक रूप से भी उन्हें पढ़ाने की आवश्यकता है। कई अनुसंधानों की जाँच-पड़ताल के बाद उत्पन्न अंतर्दृष्टियों (इनसाइट्स) से परिपूर्ण यह पुस्तक इस बात का पक्ष रखती है कि सही जवाब देने से कहीं अधिक अच्छा है, सही सवाल पूछ पाना। यह पुस्तक शिक्षकों के लिए सीखने और सिखाने के बेहतर तरीकों को अपनाने के साथ इस बात को समझने के लिए प्रेरित करती है कि बच्चों में सीखने की प्रक्रिया को ओर बेहतर कैसे बनाया जा सकता है?

पुस्तक इस बात का खुलासा करती है कि कुशल तरीके से सीखने, याद रखने और सीखे हुए को नई समस्याओं पर लागू करने में निर्देशन अहम भूमिका अदा करता है। लेखिका लिखती हैं कि रचनात्मकता का संबंध 'हाथों से करके सीखने' से नहीं है, बल्कि 'संज्ञानात्मक गतिविधि' (सूचनाओं में से सूचना प्रासंगिक का चयन और पूर्वज्ञान के साथ मिलाकर आत्मसातीकरण करना) से है। लेकिन गतिविधियों में कुशलता लाने के लिए किया जाने वाला अभ्यास सीमित हो ताकि बच्चा ऊबाऊ न महसूस करने लगे।

© NCERT not to be republished

अर्थात अवधारणात्मक और प्रक्रियात्मक सीखना साथ चले।

किसी विद्यार्थी का अर्थ-विषयक ज्ञान अनेक तरीकों से बढ़ता है, जैसे— ज्ञान की मात्रा, उसका मौजूदा स्वरूप, पूर्वज्ञान से संबंध, ज्ञान ग्रहण करने में आने वाली जटिलताएँ आदि। लेखिका के अनुसार याददाश्त की फ़ितरत ही व्यवस्थित होना है। इसीलिए बच्चों को सिखाने के लिए पदानुक्रमों को प्रदर्शित करने, सह-संबंधों को रेखांकित करने, कार्य-कारण को स्पष्ट करने जैसे तरीके अपनाने चाहिए। मानव स्मृति का सीखने से घनिष्ठ संबंध है। मानव स्मृति, मौजूदा व्यवस्थित सूचना(ओं) में नवीन सूचना(ओं) को समाविष्ट एवं पुरानी सूचना(ओं) को रूपांतरित करते हुए काम करती है। दरअसल स्मृति हज़ारों किताबों वाले पुस्तकालय जैसी है, जहाँ सब कुछ व्यवस्थित है और उसकी अपनी एक उपयोगी वर्गीकरण प्रणाली कार्य करती है। ताकि ज़रूरत पड़ने पर सूचना को पुनः निकाला जा सके।

किसी एक कक्षा के सभी बच्चों की याददाश्त एक जैसी नहीं होती, ऐसे में शिक्षक द्वारा काम के बोझ का बच्चे की याददाश्त पर पड़ने वाले प्रभाव का आकलन पहले ही किया जा सकता है। कार्य को छोटे-छोटे टुकड़ों में बाँटा जा सकता है और निर्देश लिखकर देने के साथ परिचित सामग्री का उपयोग करते हुए कागज़-पेंसिल के उपयोग करने हेतु प्रोत्साहित किया जा सकता है। लेखिका का विचार है कि हमारे पास एक याद रखने के लिए अद्‌भुत मशीन हमारा जटिल 'मस्तिष्क' है। जिसका हमें कल्पनाशील तरीकों से उपयोग करना चाहिए। पियाजे के कोरी-पट्टिका के संप्रत्यय को नकारने, फ्रायड के द्वारा बचपन के अनुभवों का प्रभाव और रूसो का बच्चों को उदात्त जंगली (नोबल सेवेजेस) कहना इस बात की ओर संकेत करता है कि सीखना तो प्राकृतिक क्रिया है, जिसे औपचारिक और अनौपचारिक संसाधनों व तरीकों से केवल परिमार्जित किया जा सकता है।

पुस्तक, बच्चे की वृद्धि और विकास क्रम के शारीरिक और मानसिक पक्षों को ध्यान में रखकर सीखने और सिखाने के मनोवैज्ञानिक तरीकों को साझा करने की अतुल्य वैचारिक अभिव्यक्ति है। इसके साथ ही अनुवादक के अनुभवों के सार्थक प्रयास का फलित होना भी पुस्तक के अनुवाद में स्पष्ट रूप से झलकता है। लेखिका मस्तिष्क के उद्विकास और शिक्षण के माध्यम से मस्तिष्क की संरचना तथा इसकी कार्यविधि की समझ के द्वारा ध्यान, प्रत्यक्ष ज्ञान, स्मृति, शक्ति, बुद्धिमत्ता तथा रचनात्मकता के जन्म लेने और विद्यालयी वातावरण में इन्हें पोषण प्रदान करने के तरीकों से सीखने की प्रक्रिया के प्रबलीकरण पर ध्यान केंद्रित करना चाहती हैं। चूँकि विद्यालय में तनावयुक्त माहौल होने से मस्तिष्क विशेष प्रकार के रसायनों का स्राव करता है, जिससे बच्चों में सीखने की प्रक्रिया बाधित होती है। वातावरण में वस्तुओं और लोगों से अंत:क्रिया करते हुए, बच्चे बहुत कुछ सीख सकते हैं। बच्चे खेल-खेल में जो अंत:क्रिया करते हैं, उससे वे प्राथमिक क्षमताएँ और कक्षायी ज्ञान के द्वारा वे अपनी द्वितीयक क्षमताएँ अर्जित करते हैं।

© NCERT not to be republished

लेखिका व्यक्त करती हैं कि बच्चे जन्म से कोरी पट्टिका नहीं होते। वे कुछ क्षमताओं के साथ पैदा होते हैं। चूँकि प्रकृति और परिवेश एक-दूसरे से एक चक्रीय तरीके से अंत:क्रिया करते हैं। इस कारण बच्चे जिस परिवेश में बड़े होते हैं, उस परिवेश के अनुसार ही उनकी क्षमताओं का विकास होने लगता है। यही बात बच्चों में नैतिक विकास के दौरान घटित होती है। बच्चे प्रारंभ में व्यक्तिगत आनंद तथा पीड़ा और अपनी आवश्यकताओं के आधार पर नैतिकता सीखते और प्रदर्शित करते हैं, बाद में पारम्परिक तार्किकता के कारण अनुमोदन करने के साथ ही सामाजिक नियमों की पालना करते हुए स्वयं के अनुभवों से नैतिकता के नए आयाम सृजित करते हैं। लेखिका का मत है कि बच्चों में अनुशासन संबंधी प्रक्रिया का विकास आत्मसातीकरण के द्वारा होता है। यह सब कुछ जीन पियाजे के "स्कीमा सिद्धांत" के अनुरूप ही घटित होता है।

पुस्तक सीखने की प्रक्रिया में प्रकृति तथा परवरिश पर विशेष मंथन करती नज़र आती है। बहस इस बात पर है कि बच्चे की आंतरिक क्षमताएँ उसके सीखने में सहायक हैं तो सीखने-सिखाने की इस प्रक्रिया में वातावरण की भूमिका क्या है? प्रकृतिवादियों के अनुसार जिस वातावरण में बच्चे पलते-बढ़ते हैं, उसी के अनुरूप उनकी क्षमताएँ भी विकसित होती हैं। रुडयार्ड किपलिंग की कहानी द *जंगल बुक* का मोगली इसका स्पष्ट उदाहरण है। तभी तो वैयक्तिक अंतर कुछ हद तक प्रकृति और परिवेश के कारण हैं। लेखिका ने विभिन्न अनुसंधानों को आधार बनाकर बुद्धिमत्ता को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। पुस्तक बुद्धिमत्ता के प्रति पाठक के नज़रिए को व्यापक बनाने को प्रोत्साहित करती है। जीवन की जटिल परिस्थितियों में, जहाँ नयापन, अनिश्चितता और अस्पष्टता होती है, वहाँ बुद्धि-लब्धि ज़्यादा महत्वपूर्ण होती है।

पुस्तक इस बात का स्पष्टीकरण देती है कि उत्प्रेरणा, एक स्वाभाविक मानवीय गुण है, जो हम सब में भिन्न-भिन्न मात्रा में उपस्थित होता है। तो फिर बच्चों को सीखने के लिए कैसे प्रेरित किया जाए? इसका उत्तर छुपा है दंड, ईनाम या प्रतिस्पर्धा में। परंतु लेखिका लिखती हैं कि जो बच्चे स्वयं से प्रेरित हैं, उन्हें खुद को समझने का अवसर देकर, उनकी अपनी सहज प्रेरणाओं और इच्छाओं पर सोच-विचार करने के लिए प्रोत्साहित करने तथा आत्म-चिंतन के द्वारा उत्प्रेरणा का भाव जाग्रत किया जा सकता है। इस तरह जाग्रत प्रवीणता और उन्मुक्त मनोवृति, समय के साथ बच्चों को अधिक सक्षम बनाने में मदद करती है।

लेखिका ने सुझाया है कि सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में परीक्षणों के द्वारा मूल्यांकन में सुधार करने के क्या तरीके हो सकते हैं? जाने-माने शिक्षाविद् एल्बर्ट शैन्कर ने कहा है कि मवेशियों का वज़न तौलने से वे मोटे नहीं हो जाते अर्थात् केवल परीक्षा लेने से बच्चे चतुर नहीं बन सकते। उनका मूल्यांकन करने के बाद ऐसे तरीके भी शिक्षक को सुझाने चाहिए जिनसे बच्चों के सीखने के कमज़ोर क्षेत्रों को सुदृढ़ किया जा सके। शिक्षा के संदर्भ में भावनात्मक स्वास्थ्य को रेखांकित करते हुए लेखिका कहती हैं कि स्कूल को सिखाने की प्रक्रिया में बच्चों की भावनाओं को

© NCERT not to be republished

समझना और महत्व देना चाहिए। ठीक उसी तरह एक शिक्षक को भी यह जानने की महती आवश्यकता है कि बच्चों में जागरूकता को कैसे बढ़ाया जाए? इसके साथ शिक्षक को सिखाने की प्रक्रिया में यह भी शामिल करना चाहिए कि बच्चे कैसे अपनी भावनाओं को, कहाँ और कितनी मात्रा में प्रदर्शित करें। जिन बालकों में भावनात्मक उत्तेजना जितनी अधिक होती है, उनमें नियमन भी ज़्यादा महत्वपूर्ण होते हैं। पुस्तक में अकादमिक भावनाएँ, तनाव तथा परिपक्वता का भी मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर वर्णन किया गया है।

लेखिका ने किशोरों में होने वाले परिवर्तनों व उनकी विशेषताओं को उजागर करने का प्रयास किया है। लेखिका का मत है कि किशोरों में होने वाले शारीरिक व मानसिक बदलावों को सही दिशा देकर उनका जीवन सफल बनाया जा सकता है। लेखिका द्वारा शिक्षा पर लिखी गई यह पुस्तक बाल-मनोविज्ञान पर पिछले कई वर्षों तक हुए अनुसंधानों का सारांश प्रस्तुत करती है। यह पुस्तक शिक्षक को बच्चों को समझने और उन्हें सिखाने के नए-नए तरीके खोजने में मदद कर सकती है। पुस्तक के माध्यम से सीखने-सिखाने और बच्चे के विकास के लिए निर्धारक पक्षों का शब्दों के रूप में चित्रण करने के लिए लेखिका जितनी प्रशंसा की पात्र है, उतनी ही धन्यवाद की पात्र अनुवादिका भी है। साथ ही, एकलव्य प्रकाशक भी पुस्तक के प्रकाशन के लिए बधाई का पात्र है, जिन्होंने बहुत ही सस्ती दर पर यह पुस्तक साधारण जनता तक उपलब्ध कराने का असाधारण प्रयास किया है।

© NCERT not to be republished